रानी दुर्गावती यशोगाथा

अतुल दुबे

रानी दुर्गावती जिनका जन्म 5 अक्टूबर 1524 भारतीय पंचांग के अनुसार माना जाता है। भारत की एकमात्र वीरांगना जिन्होंने अपने विवाह के 6 वर्ष बाद अपने पति दलपतशाह की असमय मृत्यु के बाद अपने पुत्र वीरनारायण को सिंहासन पर बैठा कर उसके संरक्षक के रूप में स्वयं शासन करना प्रारंभ किया।

24 जून को गढ़ा मंडला की वीरांगना रानी दुर्गावती का बलिदान दिवस मनाया जाता है उस दिन 1564 ईस्वी में रानी ने मुग़ल सेनापति आसफ खाँ से लड़ते हुए नरई की रणभूमि में आत्मोत्सर्ग किया था।

यदि इतिहास के पन्नों को पलटा जाए तो हल्दीघाटी का युद्ध नरई युद्ध के 12 साल बाद हुआ था, पर वही जून का महीना, वही अकबर का सेनापति आसफ खाँ और मुगल सेना से युद्ध और पराजय। इस युद्ध में अंतर इतना था कि हल्दीघाटी से महाराणा प्रताप बचकर निकल गए थे जबकि दुर्गावती ने बचकर निकलने से साफ मना कर दिया और स्वयं की कटार से आत्मघात कर लिया था। मुगल दरबार के इतिहासकार अबुल फज़ल ने अपनी पुस्तक अकबरनामा में हल्दीघाटी की लड़ाई से अधिक महत्व नरई के युद्ध को दिया है। इस शोध के माध्यम से मैं भारत सरकार और स्थानीय सरकार विशेष रूप से पर्यटन विभाग से निवेदन करना चाहूँगा कि जब भी पर्यटक जबलपुर के भेड़ाघाट बरगी और अन्य स्थलों का भ्रमण करें तो उन्हें इन्हीं स्थलों के साथ समाधि स्थल, नरई और मदन महल के इतिहास को अवश्य दिखाया जाए। राजा संग्रामशाह का राज्य सबसे बड़ा और वीर गैर-मुस्लिम राज्य था जिसमें 52 गढ़ थे और क्षेत्रफल करीब 2,75,000 वर्ग किलोमीटर था। वे पराक्रमी शासक होने के साथ ही

संस्कृत के प्रकांड विद्वान भी थे। गढ़ा मंडला के अंचल में आज भी उनकी याद लोकगीतों में अमर है–कहाँ गए राजा अमान बन की रौबे चिरैया।

अबुल फ़ज़ल ने अपनी पुस्तक अकबरनामा में रानी दुर्गावती की योग्यता की प्रशंसा लिखी है, वह श्रेष्ठ घुड़सवार, तीरंदाज और कुशल बंदूकची थी। मालवा के दक्षिणी इलाके के मियाना अफगानों को और मालवा के सुल्तान बाज़ बहादुर को रानी ने पराजित किया था, वह उनकी बहादुरी का प्रमाण है। रानी दुर्गावती के राज्य में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन दरबारी भी थे, जिनकी जानकारी इस प्रकार है–

- **आधार सिंह कायस्थ–**रानी दुर्गावती के समय दुर्गावती के वीर दीवान आधार सिंह कायस्थ थे, अबुल फज़ल ने इन्हें जाति का बखील बताया है। आधार सिंह अपनी वीरता, क्षमता और स्वामिभक्ति के लिए प्रसिद्ध थे। आधार सिंह के नाम पर जबलपुर में आधारताल और एक रेलवे स्टेशन आधारताल स्थित है।
- **भोज सिंह कायस्थ–**भोज सिंह महाराज संग्राम सिंह के समय में सेना के ऊँचे पद पर स्थित थे। अबुल फज़ल ने इन्हें भोज कैथा लिखा है। चौरागढ़ के खज़ाने की रक्षा भी यही किया करते थे। चौरागढ़ युद्ध में वीरनारायण ने इनको आदेश दिया था कि महिलाओं का अपमान न होने पाए। चौरागढ़ युद्ध के बाद इन्होंने महिलाओं के जौहर को सफल बनाया था।
- **मधुकर भट्ट–**तैलंग ब्राण मधुकर भट्ट अपने साथ में 7,500 दक्षिणी ब्राणों को मूँगी पत्तन कोलेश्वर आदि स्थानों से नर्मदा तट के गढ़ा क्षेत्र में आए थे।
- **महेश ठाकुर–** महेश ठाकुर रानी दुर्गावती के पुरोहित थे। वह मैथिल ब्राण थे। रानी के शासनकाल में और इसके पूर्व इन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की।
- **रघुनंदन राय–**रघुनंदन राय जी ने बस्तर से सफेद हाथी प्राप्त किया था, लोक मान्यता के अनुसार रानी दुर्गावती के पास वही सफेद हाथी रहा।
- **मान ब्राम्हण, मियाँ भिकारी रूमी**–जैसे अनेक विद्वान और योद्धा रानी दुर्गावती के समय महत्वपूर्ण माने जाते हैं। चौरागढ़ और सिंगोरगढ़ के वैभवशाली किले आज गुमनामी के अँधेरे में हैं। रानी के बाद के गोंड राजाओं के बारे में बहुत

कम जानकारी है। रानी दुर्गावती की स्मृतियाँ लोकमानस में लोकगीतों के रूप में आज भी जीवित है। लोक-गीतकारों का मन रानी की पराजय स्वीकार करने को तैयार नहीं है, वह कहते हैं कि रानी ने अकबर को ऐसी करारी हार दी थी कि अकबर कहने लगा– "अबकी चूक बगस मोरी माता, अब ना आऊँ तोरे देश" और कहीं-कहीं रानी को दुर्गा का रूप माना है। एक गोंडी लोकगीत में रानी का इस तरह से बखान किया है–"अखियन से अगिया बरसे, तन से रकत के धार" आज भी सतपुड़ा अंचलों में सुना जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

- प्रेरणा पथ, प्रकाशक विद्या भारती, महाकौशल प्रांत, नवंबर-दिसंबर 2017
- रानी दुर्गावती, डॉ. सुरेश मिश्रा, प्रकाशक मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2012
- गोंडवाना की कथा, लेखक इरे चेस्टरटान।
- गढ़ा मंडला के गोंड राजा, लेखक राम भरोसे अग्रवाल।
- गढ़ा का गोंड राज्य, डॉ. सुरेश मिश्र, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

अतुल दुबे–

पूर्व संकायध्यक्ष एवं कार्य परिषद् सदस्य,

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,

जबलपुर एवं प्राध्यापक श्रीराम इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जबलपुर